अध्याय - 5

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और पाठ्यक्रम को जो चेले बनाने के लिए है उसे परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	**आराधना** (20 मिनट)	***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है**

<u>परिभाषा</u>

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करें :

पढ़े या शिक्षा देः "परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है"

मूर्तियों का स्वभावः

कुछ लोग मूर्तियाँ बनाते हैं जो लोगों के स्वरूप में होती हैं और हालाँकि इन मूर्तियों की आँखे होती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती उनके कान होते हैं पर वे सुन नहीं सकती । ये मृत पत्थर या लकड़ी की मूर्तियाँ न तो बोल सकती है और न ही कुछ कर सकती हैं। अन्य लोग अपने दार्शनिक विचारों मे एक छवि बना लेते हैं कि उनके एकमात्र परमेश्वर का रूप शायद ऐसा ही होगा। तौभी मनुष्य का मन चाहे जितने भी परमेश्वरों की रचना करे चाहे वे बहुदेववादि हों या एकईश्वरवादी हों उन में से किसी में भी वास्त्विक जीवन नहीं है।

मूर्तियों का प्रभावः

मनुष्य द्वारा बनाई गई परमेश्वर की मूर्ति की आराधना पूरी तरह से व्यर्थ है। ऐसी मूर्ति या ऐसा परमेश्वर कभी भी प्रतिउत्तर नहीं देता । सबसे बुरी बात जिसके विषय में बाइबल चेतावनी देती है वह यह हैः कि जो लोग ऐसे परमेश्वर जो अपने मन से और भावनाओं से अपनी चित्रकला की सहायता से और अपने उद्देश्य के कारण या अपने धार्मिक विचारों के कारण उनको गढ़ लेते हैं। वे लोग जो ऐसी मनुष्य द्वारा बनाई मूर्ति या मनुष्य द्वारा गढ़े हुए देवता (भजन 115:8) की आराधना करते हैं वह उन्ही की मूर्ति के समान बन जाते हैं। वे जो धन के देवता की आराधना करते हैं वे भौतिकवादी (साँसारिक) बन जाते हैं। और जो कामदेवता वीनस की आराधना करते हैं वें अनैतिक यौन सम्बन्धों में फँस जाते हैं।

इसी रीति से जो जिस देवता की आराधना करता हैं वह उसी के समान व्यवहार को प्रकट करता है। एक बदला लेने वाला आतंकवादी एक ऐसे देवता की आराथना करता है जो बदला लेता है। एक व्यक्ति जो सदा दूसरों को सताता है वह एक ऐसे देवता की आराधना करता है जो निरन्तर लोगों को सताता है। और एक व्यक्ति जो क्षमा नहीं कर सकता है और सदा कड़वाहट से भरा रहता है वह ऐसे ही देवता की आराधना करता है जो क्षमा नहीं कर सकता है।

बाइबल का सिद्धान्तः

मनुष्य द्वारा बनाए गए देवताओं या उनके द्वारा गढ़े हुए देवता के विपरीत जो लोग जीवित परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे दिन ब दिन बाइबल के उस जीवित परमेश्वर के समान बनते जाएँगे! आराधना हमें बदल देती है उन क्षेत्रों में जहाँ हमें समझना है कि हम कौन हैं और हम कैसे हैं! इस प्रकार जब हम अपने पवित्र, धर्मी और जीवित परमेश्वर

की आराधना करते हैं तब हम और अधिक पवित्र और धर्मी बनते जाएँगे। और जब हम एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर की आराधना करेंगे तो हम भी प्रेमी और दयालु बनते जाएँगे!

2. जीवित परमेश्वर का स्वभावः

पढ़ेः निर्गमन 3:1-12

परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है और उसके निजि कार्य हैं।

- परमेश्वर कोई व्यक्तित्वहीन सामर्थ नहीं है वरन वह तो एक जीवित व्यक्तित्व है। वह जीवित है।
- परमेश्वर स्वयं को आग की लपटों में और प्रभु के स्वर्गदूत में प्रकट करता है।
- परमेश्वर हम से स्पष्ट रूप से बातें करता है। इस से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर क्या कह रहे हैं। हम परमेश्वर के विचारों, भावनाओं, इच्छाओं, और मर्ज़ी को इस हद तक कि कि जो कुछ वह हम पर प्रकट कर रहा है हम उसे समझ सकते है।
- परमेश्वर सब कुछ देख सकते हैं वे केवल वह ही नहीं देख सकते हैं जो हम कर रहे हैं वरन वह भी जो अदृष्य है। वह हमारे दुख और पीड़ा को और हमारे जीवन के भीतर क्या चल रहा है उसे भी देख सकते हैं।
- परमेश्वर सब कुछ सुन सकता है। वह हमारी बातें, हमारी फुसफुसाहटे, हमारी सहायता की पुकार और हमारी प्रार्थनाएँ भी सुन सकता है।
- परमेश्वर के पास एक दिल है जो भावनात्मक है। उसे हमारे दुख-सुख और द्वन्द की चिन्ता है। बाइबल बताती है कि वह अपने लोगों से प्रेम करता है और अपना पवित्र क्रोध उन पर दिखाता है जो उसका विरोध करते हैं। परमेश्वर भी दुखी और आनन्दित होता है।
- परमेश्वर हमारे स्थान पर कार्य करता है स्वर्ग से नीचे आकरहमें बचाता है। इसके इलावा परमेश्वर हमें कोई अर्थपूर्ण कार्य देकर हमें स्वयं के साथ मिला लेता है जैसे उसने मूसा को साथ मिला कर इस्राएल में काम कराया था। और परमेश्वर कभी भी हमे किसी काम को करने के लिए अकेला नहीं भेजता है। वह स्वयं हमारे साथ चलता है और उस काम को पूरा कराता है। ठीक वैसे ही जैसे उसने मूसा के साथ चल कर उस का काम पूरा कराया था।

परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है जिस ने मनुष्य को अपने ही रूप में रचा थाः

एकमात्र परमेश्वर जिस ने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है वह मनुष्य की कल्पना की रचना नहीं है। परमेश्वर के निजि कार्य हैं जैसे कि बातें करना, देखना, सुनना, अनुभव करना, तर्क करना, अपनी मर्ज़ी प्रकट करना, और कार्य को पूरा करना, इसलिए नहीं क्योंकि हम मनुष्य वह सब कुछ कर सकते हैं वरन इस लिए कि परमेश्वर मनुष्य के मन की प्रस्तुति नहीं है। वह ऐसा परमेश्वर नहीं है जिसे मनुष्य के विचारों के अनुसार रचा गया है। वरन वह तो स्वभाव से ऐसा जीवित व्यक्ति है जो पूरी तरह से निजि व्यक्तित्व का मालिक है।

वह कोई मनुष्य नहीं था जिसने परमेश्वर को मनुष्य के स्वरूप में रचा था। बल्कि वह परमेश्वर ही था जिस ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में रचा था। परमेश्वर एक व्यक्ति है इसलिए उसने अन्य व्यक्तियों की रचना की थी जो परमेश्वर के समान हैं। हम मनुष्य एक दूसरे से बातें कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर बातें कर सकता है। हम देख सकते हैं क्योंकि परमेश्वर देख सकता है, हम भी तर्क और बुद्धि से सोच सकते हैं क्योंकि परमेश्वर तर्क और बुद्धि से सोच सकता है, हम चुनाव और निर्णय ले सकते हैं क्योंकि परमेश्वर चुनाव और निर्णय ले सकता है। क्योंकि परमेश्वर जीवित है हम मनुष्यों की भी समान प्रक्रियाएँ हैं। फिर भी हमारी निजि प्रक्रियाएँ परमेश्वर की तुलना में सीमित हैं।

परमेश्वर एक जीवित व्यक्तित्व है जो मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रखता हैः

क्योंकि परमेश्वर और हम मनुष्य दोनो ही जीवित प्राणी हैं इसलिए हम एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ संगति भी कर सकते हैं। एक व्यक्ति होने के नाते हम परमेश्वर और हम के साथ बातचीत कर सकते हैं, एक दूसरे को जान सकते हैं, समझ सकते हैं, एक दूसरे को महसूस कर सकते हैं, हम एक दूसरे के साथ

संगति और काम भी कर सकते हैं। यदि परमेश्वर एक निजि रूप से सम्बन्ध बनाने वाला नहीं होता तो हमारा परेश्वर के साथ कभी भी घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव ही नहीं होता। लेकिन क्योंकि परमेश्वर एक जीवित व्यक्ति है ऐसा निजि सम्बन्ध स्थापित होना सम्भव ही नहीं है वरन वास्तव में स्थापित हो चुका है।

आराधनाः
परमेश्वर की आराधना उसके इस सर्वोत्तम गुण के लिए करें क्योंकि वह जीवित है और आप उसे जानते हैं। तीन-तीन व्यक्तियों के दल बना कर आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना**(20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 15:1 - 18,20**

बारी-बारी वचन बाँटें या निज लिखे नोट्स से पढ़ेः संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में जो लेखाँश आप को दिया गया है उससे सीखा है उसे सबके साथ बाँटें। (मत्ती 15:1 - 18,20)

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***बाइबल*** **बाइबल को प्रयोग करने के 7 तरीके**

प्रोत्साहित करना, बाइबल का इस्तेमाल क्यों करें?

1. प्रभु यीशु मसीह का उदाहरणः

बाइबल के प्रति उसकी धारणा को सिद्ध करनाः
यीशु मसीह मानते थे कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन है। सभी लेखकों ने सारे वचन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे थे। (मत्ती 22:43) वे बाइबल के वचन को परमेश्वर का अधिकारपूर्ण वचन मानते थे। वह उसे परमेश्वर का हर परिस्थिति में आत्मा में बोला गया अन्तिम वचन मानते थे। (मत्ती 4:1-10) वह उन लोगों को आशीषित मानता था जो परमेश्वर के वचन को सुनते थे और उसे आज्ञा समझ कर मानते थे। (लूका 11:28; प्रकाशितवाक्य 1:3)

यीशु मसीह स्वयं वह व्यक्ति है जिसने बाइबल को प्रेरित किया और वह स्वयं ही बाइबल में निहित विषय सामग्री हैः
1 पतरस 1:10-12; प्रकाशितवाक्य 19:10.
नोट्सः प्रेरित पतरस ने कहा था, यीशु की आत्मा ने ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित किया था कि वह पुराने नियम को लिखें। यीशु ने कहा था कि सच्ची आत्मा और भविष्यद्वाणी के शब्द वही हैं जो यीशु की पवित्र आत्मा ने पुराने नियम में सिखाए थे। (1 पतरस 1:10-12) और वह जो भी यीशु मसीह ने नए नियम में सिखाया था (मत्ती 5:17; युहन्ना 3:11-13; 5:39; 8:18-19, 24, 31-32, 51, 58) इसको अन्य शब्दों मे ऐसे भी कह सकते हैं इस बात की घोषणा करना जो यीशु मसीह ने अपने विषय में कहा था उसके वचन और कार्य जो बाइबल में दिए गए है वह तो भविष्यवाणी करने का आत्मिक वरदान है। (प्रकाशितवाक्य 19:10)
(बौक्सर का शब्दकोष ए.एम.डी.टी. जिनक्रिच पृष्ट 730) यह एक बाइबल की भविष्यद्वाणी है जो दूसरे लोगों द्वारा दी गई थी पर यह अपनी इच्छा से दी गई भविष्यद्वाणी नहीं है वरन वह तो यीशु मसीह की अपने क्रूस पर मारे जाने की घोषणा है। (1 कुर.2:2 cf. 4:6)

यीशु मसीह ने बाइबल (परमेश्वर के वचन) का प्रयोग कैसे किया था?
पढ़ेः लूका 2: 46-47
नोट्सः अपने मानव स्वभाव में यीशु ने छोटी आयु से ही परमेश्वर के वचन का अध्ययन शुरू कर दिया था।

उसने उसे सुन कर सीखा था, प्रश्न पूछ कर और अन्य लोगों के साथ विचार-विमर्श करके सीखा था।
उस समय में परमेश्वर का वचन खर्रे की तरह लपेट कर लिखा जाता था जो पैपीरस या चमड़े का बना होता था। यीशु मसीह परमेश्वर के वचन का बहुतायत से इस्तेमाल करते थे। वे उस वचन का अपने निजि जीवन में पालन भी करते थे। (लूका 4:21; 24:25-27, 40-45) वे परमेश्वर के वचनों को शत्रु के विरुद्ध बोलते थे। (मत्ती 4:4,7,10) वे परमेश्वर के वचन को सत्य की शिक्षा देने के लिए भी इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 5:21-22,27,31-34,38-39,43-44) वह उसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए भी इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 19:3-6) झूठी शिक्षाओं को खंडित करने के लिए भी यीशु वचन का इस्तेमाल करते थे। (मत्ती 22:42-46) लोगों के पाखण्डी जीवन का खुलासा करने के लिए (मरकुस 7:5-9) और भविष्यद्वाणी करने के लिए भी यीशु ने वचन का प्रयोग किया था। (मत्ती 26:31)

यीशु ने स्वयं और लोगों ने उसकी शिक्षा के विषय में क्या कहा था?
पढ़ेः युहन्ना 7:14-18)
नोट्सः हालाँकि यीशु के पास कोई धर्म शास्त्र की कोई शिक्षा नही थी जैसा कि रब्बी के स्कूलों में दी जाती थी। पर वे परमेश्वर का वचन अच्छी तरह से जानते थे। यीशु मसीह की सारी शिक्षा और प्रशिक्षण एकमात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर से जिसने उसे इस पृथ्वी पर भेजा था, उसी की ओर से ही आती थी। वे दावा करते थे कि बिना किसी झूठ का सहारा लिए उन्होंने सदा सच ही बोला था।

यीशु मसीह ने कैसे लोगों की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का विकास किया था?
पढ़ेः लूका 10:25-28
नोट्सः यीशु एक प्रश्न का उत्तर कई बार एक अन्य प्रश्न से देते थे। - यह पिंग-पॉग खेल का सिद्धान्त है। इस रीति से लोगों को अपने आप सच्चाई तक पहुँचाना था। बाइबल का वह सच जिसे हम अपने आप खोज कर निकालते हैं। वही उनके लिए उनकी धारणा बन जाती है। इस लिए किसी प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर लोगो को बाइबल का संदर्भ वचन बताएँ। जिससे वे उसे पढ़ कर स्वयं उस सत्य की खोज करके उसे जान जाएँ।

2. <u>पौलूस प्रेरित का उद्हरणः</u>

बाइबल के विषय में उसकी प्रतिबद्धता
प्रेरित पौलूस बाइबल को परमेश्वर के वचन द्वारा प्रेरित वचन मानते थे। वह बाइबल के हर वचन को परमेश्वर पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित वचन मानते थे।(2 तिमु. 3:16-17) वह वचन को परमेश्वर का अधिकारपूर्ण वचन मानते थे। वह उसे हर परिस्थिति में परमेश्वर का अन्तिम वचन मानते थे। (प्रेरितों के काम 13:34-35) प्रेरित पतरस का कहना था कि परमेश्वर ने पौलूस को अपनी 13 पत्रियों को लिखने के लिए अपनी बुद्धि और समझ दी थी। (2 पतरस 3:15-16)

पौलूस एक छोटे दल में बाइबल का अध्ययन कैसे करता था?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 17:2-4
नोट्सः पौलूस की आदत थी कि वह ऐसे लोगों का दल ढूँढता था जिसे परमेश्वर के वचन जो बाइबल में लिखे हैं उन को सीखने की इच्छा रखते थै। हर हफ्ते वह दल मिलता था। पौलूस उनके साथ तर्क करता था, जिसका अर्थ है कि वह उन शब्दों पर विचार विमर्श करता था और दल के सदस्यों को उनके विषय में सोचने को कहता था। क्योंकि परमेश्वर का वचन वही है जिसे मन ग्रहण करता है। उसका अर्थ यह नही है कि उस पर बहस की जाए। वचनो के विचार-विमर्श के समय पौलूस एक अगुवा होने के नाते दल को समझाने की कोशिश करता था कि बाइबल की सच्चाईयों को उनके सामने साबित कर सके। समझाने का अर्थ है कि वह बाइबल को पूरी तरह से खोल कर दल के सामने रख दे। इसका अर्थ यह भी है कि वह कठिन लेखाँशों के अर्थों को भी समझा कर सिखाना। पौलूस का छोटे दल में बाइबल की शिक्षा देने का लक्ष्य यह भी था कि वह लोगों को मजबूर कर दे कि वे बाइबल की सच्चाईयों पर विश्वास करने लगें। इफसुस में पौलूस ने दो साल तक ऐसे अनेक विचार विमर्श किए थे। (प्रेरितों के काम 19:8-10)

पौलूस का शिक्षा देने और प्रचार करने का लक्ष्य क्या था?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 20:20,27,30-31

नोट्सः पौलूस का उद्धेश्य था कि वह लोगों को परमेश्वर की सारी मर्ज़ी को समझा दे और वह सब भी जो उनके लिए सहायक सिद्ध हो। एक तरफ जहाँ उसने सभी महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं को सिखाया था वहाँ दूसरी ओर उसने उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया था जो उनके लिए किसी तरह से सहायक न हो। पौलूस ने मसीही लोगों को चेतावनी दी थी कि वे स्वयं को मूर्ख बहस से न जोड़ें और न ही झूठी शिक्षाओं से जुड़ जाएँ। (तिमु 1:3-7)

पौलूस के शिक्षा देने और प्रचार करने के क्या नियम थे?
पढ़ेः 1 कुर. 4:6
नोट्सः पौलूस का सबसे बड़ा नियम यह था कि वह कभी भी ऐसा कुछ नहीं सिखाता था जो बाइबल में न लिखा हो। इसके लिए यीशु के द्वारा दी गई चेतावनी पर ध्यान दें जो प्रकाशितवाक्य के 22:18-19 में लिखि है, "यदि कोई मनुष्य इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक में कुछ बढ़ाएगा या उसमे से कुछ घटाएगा तो परमेश्वर उसका नाम जीवन की पुस्तक से काट कर बाहर निकाल देगा, जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।"

3. बिरिया के लोगों का उदाहरण:
बिरिया के लोग कैसे बाइबल के वचनों का प्रयोग करते थे?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 17:10-12

नोट्सः बिरिया के लोग बाइबल के वचन को सुनते थे और उसकी शिक्षाओं को सही रीति से उत्सुक्ता से ग्रहण करते थे। वे हर दिन बाइबल से जाँचते थे कि प्रचारक सही शिक्षा दे रहा है या नहीं। सब कुछ बाइबल के अनुसार सच है, कहीं कुछ झूठ तो नहीं है। वे परमेश्वर के वचन के विषय में अपनी ही एक धारणा विकसित करना चाहते थे। वचन को जाँचने (जीः अनाक्रीनो) का शाब्दिक अर्थ है ढूँढ कर सच खोज निकालना, और प्रश्न पूछ कर उसे जान लेना, सत्य को पहचान कर उसे ऊँचा उठाना। इसका अर्थ यह भी है कि ध्यान से और गहराई से खोज करने की ज़रूरत है जो लगे मानों वह कानूनी प्रक्रिया है। सो इस रीति से यह सही और निजि घारणा बनाने के लिए ज़रूरी है कि सभी धार्मिक विषयों को पहले बाइबल से जाँच लिया जाए। सब से अच्छा तरीका यही है कि हम एक छोटे मसीही दल के साथ सत्य की जाँच करें।

4. एज़रा का उदाहरण
एज़रा ने कैसे परमेश्वर के वचन बाइबल का प्रयोग किया था?
पढ़ेः एज़रा 7:10

नोट्सः एज़रा एक महान शिक्षक था। उसने स्वयं को तीन चीज़ों के लिए समर्पित किया था। पहला बाइबल अध्ययन, दूसरा बाइबल की शिक्षाओं का जीवन में पालन करना और तीसरा बाइबल की सच्चाईयों को दूसरों को सिखाना। यह सब विद्यार्थियों और दल के अगुवों के लिए एक उत्तम उदाहरण है। इससे पहले कि आप बाइबल के इस सच को दूसरे को सिखाएँ ज़रूरी है कि आप स्वयं पहले इसका अध्ययन करें और बाइबल के इस सत्य का अपने जीवन में पालन करें।

5. सेना के अगुवे यहोशु और दाऊद के उदाहरण
परमेश्वर ने क्या वायदे किए थे और लोगों ने क्या अनुभव किया था?
पढ़ेः यहोशु 1:7-9;भजन 1:1-3

नोट्सः परमेश्वर ने सेना के अगुए यहोशु को आज्ञा दी थी कि वह लगातार परमेश्वर के वचन पर मनन करे जिस से

वह सावधानी से वह सब करे जो बाइबल के वचन में लिखा है। परमेश्वर ने वायदा किया था कि ऐसा करने से वह महसूस कर सकेगा कि परमेश्वर की नज़रों में सफलता क्या है और उसके लिए क्या लाभदायक है। राजा दाऊद ने लगातार अपने जीवन में इसे महसूस किया था कि बाइबल के वचन पर लगातार मनन करने के कारण परमेश्वर ने उसे दुष्ट लोगों से दूर रखा था और उसके जीवन को फलवन्त बनाया था। इसलिए बाइबल के वचन पर मनन करना और उसे अपने जीवन में लागू करना आपके जीवन पर भारी असर करेगा और आपको बड़ा प्रतिफल देगा। आप अपने मार्ग को सुखी और समृद्ध बना लेंगे। और आप सफल होंगे।(अर्थात आप जीवन के अर्थ को समझ पाएँगे और समझदारी से कार्य करेंगे।) और वह आपके जीवन को फलवन्त और आकर्षक बना देगा।

बाइबल अध्ययन के 5 नियमः

उपर दिए बाइबल के लेखाँश हमें बाइबल अध्ययन के लिए 5 अच्छे नियम सिखाते हैं।

- **छोटे दल**
  एक छोटा दल बनाएँ जो बाइबल का अध्ययन करना चाहता हो। अच्छा होगा यदि यह अध्ययन हर हफ्ते हो।

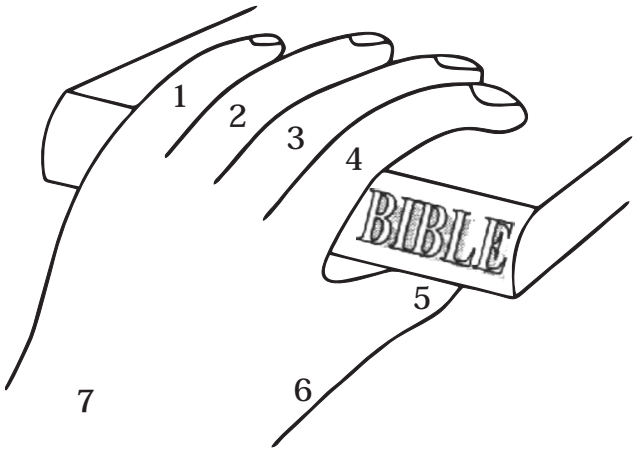
- **तथ्यों को ध्यान से देखेः**
  तथ्यों को ध्यान से देख कर सत्य को खोज कर निकालें विशेषकर परमेश्वर की पूरी मर्ज़ी के साथ और जो कुछ भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

- **सत्य का सही अर्थ समझनाः**
  प्रश्न पूछें और एक दूसरे के दृष्टिकोण(विचारों) को सुने और समझें। लेखाँश में छुपे सच पर विचार-विमर्श करें। कठिन शब्दों और विचारों के अर्थ समझाएँ। हर प्रसंग में हर बात को बाइबल के वचन से समझाएँ। बाइबल को सही रीति से समझाएँ। ऐसे में बाइबल के अन्य संदर्भों में लिखे लेखाँशों को ध्यान में रखते हुए समझाएँ।

- **सत्य को जीवन में लागू करेः**
  इस बात पर मनन करें कि परमेश्वर आप से क्या जानने को, बनने को, और करने को कह रहा है। उसके बाद ही उस सत्य को जीवन में लागू करें जो परमेश्वर आपसे लागू करने को कह रहा है।

- **सत्य को सूत्र के अनुसार सुव्यवस्थित करनाः**
  मुख्य सत्यों को सूत्र के अनुसार अपनी धारणा बनाएँ, और निर्णय लें और उन्हें जीवन में लागू करने को सुव्यवस्थित करें।

ब. उदाहरणः एक मसीही की बाइबल के प्रति ज़िम्मेदारी



1. **बाइबल को सुने**
   पढ़ेः लूका 11:28; प्रकाशितवाक्य2:7
2. **बाइबल को पढ़े.**
   पढ़ेःव्यवस्थाविवरण 17:18-20;नहेम.8:8;
   1 तिमु.4:13
3. **बाइबल का अध्ययन करे**
   पढ़ेः एज़रा 7:10;प्रेरितों के काम 17:11
4. **बाइबल के पद याद करें**
   पढ़ेः भजन संहिता 119:9,11
5. **बाइबल के संदेशों पर मनन करें**
   पढ़ेः यहोशु 1:8
6. **बाइबल के संदेश को लागू करें**
   पढ़ेः लूका 6:46-49;युहन्ना 14:21
7. **बाइबल का संदेश दूसरों तक पहुँचाएँ**
   पढ़ेः कुलुसियों 3:16, 2 तिमु. 4:2

आप जितना अधिक बाइबल को इन 7 तरीकों से इस्तेमाल करेंगे उतना अधिक आप परमेश्वर के वचन को समझने पाएँगे।

ग. व्यवहारिकःबाइबल को प्रयोग करने के 7 व्यवहारिक तरीके

प्रशिक्षण के इस पाठ्यक्रम के दौरान हम बाइबल का सही रीति से इस्तेमाल करना सीखेंगे। हम बाइबल को सुनना, पढ़ना, अध्ययन करना, बाइबल के पद याद करना, बाइबल के सत्यों पर मनन करना, उन सत्यों अपने जीवन में लागू करना और उनको दूसरे लोगों तक पहुँचाना भी सीखना होगा।
शिक्षा देः बाइबल के इन 7 व्यवहारिक तरीकों को सिखाएँ।

1. बाइबल को सुनेः

परमेश्वर की आवाज़ को सुनना सीखिये क्योंकि तब हम बाइबल के वचन से सीधे परमेश्वर की आवाज़ को सुनते हैं। और हम आशा कर सकते हैं कि परमेश्वर हम से कुछ कहना चाहता है।

2. रोज़ बाइबल पढ़ेः

बाइबल को शुरू से आख़िर तक पढ़ें।
एक, दो या तीन साल लगा कर बाइबल को शुरू से आख़िर तक पढ़ें। बाइबल में 1187 अध्याय हैं। आप चाहें तो हर दिन 3 अध्याय और खाली दिन में 5 अध्याय पढ़ कर एक साल में पूरी बाइबल पढ़ सकते हैं। रोज़ एक अध्याय पुराने नियम का और एक नए नियम का पढ़ें। चाहे तो किसी पठन योजना का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। (अतिरिक्त लेख 3 की पुस्तिका से जानकारी प्राप्त करें) यह नियमावली बाइबल के महत्त्वपूर्ण लेखाँशों को खोजने में आपकी मदद करेगी और साथ ही बाइबल के विशेष विषयों का अध्ययन करने में भी मदद करेगी।

अपने परिवार के बाइबल पढ़ कर सुनाएँ
हर दिन अपने परिवार को बाइबल का एक लेखाँश पढ़ कर सुनाएँ। उदाहरण के लिए दिन के मुख्य भोजन के समय के बाद। (इस लेखाँश के विषय में बातचीत करें और उसके लिए प्रार्थना भी करें। (व्यवस्थाविवरण 6:4-9)

दूसरे लोगों को बाइबल पढ़ कर सुनाएँ।
ऐसे अवसर खोजें जब आप बाइबल के वचन दूसरे लोगों को पढ़ कर सुना सकते हैं। जो मसीही हैं और उन्हें भी और जो गैर-मसीही हैं।

3. हर हफ्ते बाइबल का अध्ययन करें

बाइबल अध्ययन के विद्यार्थियों या चेलो का एक छोटा दल बनाईए।
ऐसे लोगोकी खोज करें जो बाइबल का अध्ययन करना चाहते हैं और एक छोटा सा दल बनाएँ। हर सदस्य बाइबल अध्ययन की सभा के लिए आने से पहले स्वयं को तैयार कर के आए। सो जब बाइबल अध्ययन की सभा में आएँ तो वे जब सत्य की खोज में, विचार-विमर्श करने में, अपनी गवाही या विचार बाँटने में, और सत्य को सही रूप से अपने जीवन में लागू करने में भाग ले सकें। यह अच्छा होगा यदि वे हफ्ते में एक बार बाइबल अध्ययन और प्रार्थना की सभा में ज़रूर मिलें।

बाइबल अध्ययन के लिए भिन्न तरीके सीखें।
बहुत से तरीके हैं जिसके द्वारा बाइबल के अध्ययन में सहायता की जा सकती है। एक पद के द्वारा, एक बाइबल की

बाइबल की एक पुस्तक के द्वारा, बाइबल के एक व्यक्तित्व के द्वारा, या बाइबल के केवल एक विषय के द्वारा। इस पाठ्यक्रम में आप एक बहुत अच्छा तरीका सीखेंगे, जिसका नाम है **पाँच कदमों का तरीका।** जिसका प्रयोग आप बाइबल के हर लेखाँश के लिए कर सकते हैं। (नियमावली 1 के - अतिरिक्त लेख 4 की पुस्तिका देखें)

4. <u>नियमित रूप से बाइबल के पदों को याद करेः</u>

नियमित रूप से बाइबल के पदों याद करने का अभ्यास करें। और ध्यान रखें कि जो पुराने पद आपने याद किये थे वे याद हैं या भूल गए हैं। (नियमावती 5 का 5 पूरक देखें)

5. <u>बाइबल की सच्चाइयों पर मनन करेः</u>

सीखे और अभ्यास करें जिससे आप लगातार बाइबल की सच्चाइयों पर मनन करते रहें। इसके लिए अधिक समय और अनुशासन की ज़रूरत होती है। मसीही मनन करने का तरीका अन्य धर्मों के मनन करने के तरीके से भिन्न होता है। अन्य धर्मों में मनुष्य स्वयं मनन का केन्द्र होता है जबकि मसीही मनन करते समय हमेशा परमेश्वर और उसके वचन ही मनन का केन्द्र होते हैं। मसीही विश्वास में मनन का केन्द्र परमेश्वर और उसके वचन होते हैं। वह तो हमेशा एक दूसरीं रीति पर केन्द्रित होता है जिसमें परमेश्वर और मनन करने वाले के बीच सम्वाद होता है। यह मनन विशेषकर परमेश्वर के साथ एकान्त में समय बिताते समय, प्रार्थना के समय, पदों को याद करते समय या फिर बाइबल का अध्ययन करते समय ही होता है। **मसीही मनन के चार कदम है - विचार करो, प्रार्थना करो, सम्बन्ध जोड़ो और उसे लिख लो।** (देखे नियमावली 1 का अतिरिक्त लेख 1 का 4 कदम))

6. <u>बाइबल की सच्चाई को जीवन में लागू करेः</u>

बाइबल की सच्चाई को अपने जीवन में लागू करें।

लागू करने का उद्देश्य

परमेश्वर ने आपको बाइबल केवल इसलिए नहीं दी है जिससे आप अपना ज्ञान बढ़ा सकें वरन इसलिए भी कि आप अपना जीवन बदल सकें।

लागू करने की सम्भावनाएँ

विचार करें जो भी अनेक बाइबल के सत्य हम ने सीखे हैं उनको हम अपने निजि जीवन में तथा संसारिक जीवन में कहाँ-कहाँ प्रयोग कर सकते हैं। बाइबल का कोई भी सत्य एक से अधिक स्थानों पर प्रयोग किया जा सकता है। स्वयं से

क्या कोई सच है जिस पर विश्वास करना चाहिए? क्या कोई ऐसी आज्ञा है जिसे मानना ज़रूरी है? क्या हम किसी वायदे का दावा कर सकते हैं? क्या बुद्धि लगाने की ज़रूरत है?	क्या कोई ऐसा व्यवहार है जिसे बदलना है? क्या कोई ऐसा पाप है जिससे बचना ज़रूरी है? क्या कोई उदाहरण है जिसका हम अनुकरण करें? क्या बाँटने के लिए कोई अच्छा संदेश है?

खुद पर लागू करनाः

परमेश्वर से पूछें कि वह आपके लिए क्या चाहता है कि आप जाने, किस पर विश्वास करें, क्या बन जाएँ या फिर क्या करें। वास्त्विक बनने की कोशिश करें और खुद पर निजि रूप से सच्चाईयाँ लागू करें। विशेषकर वे जिनका आप एक हफ्ते तक अभ्यास कर सकते हैं। लिख कर रखे कि परमेश्वर आपसे क्या लागू करने को

कह रहे हैं।

लागू करने में आपने कितनी सफलता पाई हैः
हर दिन प्रार्थना में परमेश्वर से माँगे कि वह आप को निजि रूप से जो सीखा है उसे लागू करने में सहायता करें। फिर हर हफ्ते अपने छोटे दल के साथ इस बात की गवाही दें कि आप ने निजि रूप से सत्य को लागू करने में कितनी सफलता पाई है।

7. <u>बाइबल की जो सच्चाई आपने सीखी है उसे दूसरों तक पहुँचाएँ</u>

जो कुछ आपने पढ़ा है, अध्ययन किया है, याद किया है, उन बाइबल की सच्चाईयों को बता कर, गवाही देकर, शिक्षा देकर, प्रचार करके, दूसरों को उत्साहित करके या डाँट-फटकार कर चेतावनी देकर दूसरों तक पहुँचाएँ।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना**

बारी सेः दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।
या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।

1.<u>समर्पणः</u> किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.<u>परमेश्वर के साथ निजि समयः</u>मत्ती 18:21 – 21:46 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपना मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।

3.<u>बाइबल अध्ययनः</u> अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।इफिसियों 2:1-22 इसका विषय है, “मैं कौन हूँ?”

4. <u>प्रार्थनाः</u> किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. <u>अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करेः</u> आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिक कर पूरे करें।